JEEVAK AYURVED MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL RESEARCH CENTER

PRESENTED BY
DIVYA SINGH
NANDITA SINGH

GUIDED BY
Dr. A K DUBEY
Mr. OMKAR MISHRA
Dr. KAMINI SINGH

TOPIC – MAHESHWARANI SUTRA AND ITS SCIENTIFIC RELEVANCE

माहेश्वर सूत्र

माहेश्वर सूत्र (संस्कृत: शिवसूत्राणि या महेश्वर सूत्राणि) अष्टाध्यायी में आए १४ सूत्र (अक्षरों के समूह) हैं जिनका उपयोग करके व्याकरण के नियमों को अत्यन्त लघु रूप देने में पाणिनि ने सफलता पायी है। शिवसूत्रों को संस्कृत व्याकरण का आधार माना जाता है। पाणिनि ने संस्कृत भाषा के तत्कालीन स्वरूप को परिष्कृत एवं नियमित करने के उद्देश्य से भाषा के विभिन्न अवयवों एवं घटकों यथा ध्वनि-विभाग (अक्षरसमाम्नाय), नाम (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण), पद, आख्यात, क्रिया, उपसर्ग, अव्यय, वाक्य, लिंग इत्यादि तथा उनके अन्तर्सम्बन्धों का समावेश अष्टाध्यायी में किया है। अष्टाध्यायी में ३२ पाद हैं जो आठ अध्यायों मे समान रूप से विभक्त हैं

व्याकरण के इस महनीय ग्रन्थ मे पाणिनि ने विभक्ति-प्रधान संस्कृत भाषा के विशाल कलेवर का समग्र एवं सम्पूर्ण विवेचन लगभग ४००० सूत्रों में किया है , जो आठ अध्यायों में (संख्या की दृष्टि से असमान रूप से) विभाजित हैं। तत्कालीन समाज मे लेखन सामग्री की दुष्प्राप्यता को ध्यान में रखते हुए पाणिनि ने व्याकरण को स्मृतिगम्य बनाने के लिए सूत्र शैली की सहायता ली हैं। पुनः, विवेचन को अतिशय संक्षिप्त बनाने हेतु पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती वैयाकरणों से प्राप्त उपकरणों के साथ-साथ स्वयं भी अनेक उपकरणों का प्रयोग किया है जिनमे शिवसूत्र या माहेश्वर सूत्र सबसे महत्वपूर्ण हैं।

उत्पत्ति

- माहेश्वर सूत्रों की उत्पत्ति भगवान नटराज (शिव) के द्वारा किये गये ताण्डव नृत्य से मानी गयी है।

नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

- अर्थात:- "नृत्य (ताण्डव) के अवसान (समाप्ति) पर नटराज (शिव) ने सनकादि ऋषियों की सिद्धि और कामना का उद्धार (पूर्ति) के लिये नवपंच (चौदह) बार डमरू बजाया। इस प्रकार चौदह शिवसूत्रों का ये जाल (वर्णमाला) प्रकट हुयी।"

- डमरु के चौदह बार बजाने से चौदह सूत्रों के रूप में ध्वनियाँ निकली, इन्हीं ध्वनियों से व्याकरण का प्राकट्य हुआ। इसलिये व्याकरण सूत्रों के आदि-प्रवर्तक भगवान नटराज को माना जाता है। प्रसिद्धि है कि महर्षि पाणिनि ने इन सूत्रों को देवाधिदेव शिव के आशीर्वाद से प्राप्त किया जो कि पाणिनीय संस्कृत व्याकरण का आधार बना।

सूत्र

- माहेश्वर सूत्रों की कुल संख्या १४ है जो निम्नलिखित हैं:

1. अइउण्।
2. ऋऌक्।
3. एओङ्।
4. ऐऔच्।
5. हयवरट्।
6. लण्।
7. ञमङणनम्।
8. झभञ्
9. घढधष्।
10. जबगडदश्।
11. खफछठथचटतव्।
12. कपय्।
13. शषसर्।
14. हल्

माहेश्वर सूत्र की व्याख्या

- उपर्युक्त १४ सूत्रों में संस्कृत भाषा के वर्णों (अक्षरसमाम्नाय) को एक विशिष्ट प्रकार से संयोजित किया गया है। फलतः, पाणिनि को शब्दों के निर्वचन या नियमों मे जब भी किन्ही विशेष वर्ण समूहों (एक से अधिक) के प्रयोग की आवश्यकता होती है, वे उन वर्णों (अक्षरों) को माहेश्वर सूत्रों से प्रत्याहार बनाकर संक्षेप मे ग्रहण करते हैं। माहेश्वर सूत्रों को इसी कारण 'प्रत्याहार विधायक' सूत्र भी कहते हैं। प्रत्याहार बनाने की विधि तथा संस्कृत व्याकरण मे उनके बहुविध प्रयोगों को आगे दर्शाया गया है।

- इन १४ सूत्रों में संस्कृत भाषा के समस्त वर्णों को समावेश किया गया है। प्रथम ४ सूत्रों (अइउण् – ऐऔच्) में स्वर वर्णों तथा शेष १० सूत्र व्यंजन वर्णों की गणना की गयी है। संक्षेप में स्वर वर्णों को अच् एवं व्यंजन वर्णों को हल् कहा जाता है। अच् एवं हल् भी प्रत्याहार हैं।

प्रत्याहार

- प्रत्याहार का अर्थ होता है – संक्षिप्त कथन। अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के प्रथम पाद के 71वें सूत्र 'आदिरन्त्येन सहेता' (१-१-७१) सूत्र द्वारा प्रत्याहार बनाने की विधि का पाणिनि ने निर्देश किया है।

- आदिरन्त्येन सहेता (१-१-७१): (आदिः) आदि वर्ण (अन्त्येन इता) अन्तिम इत् वर्ण (सह) के साथ मिलकर प्रत्याहार बनाता है जो आदि वर्ण एवं इत्संज्ञक अन्तिम वर्ण के पूर्व आए हुए वर्णों का समष्टि रूप में (collectively) बोध कराता है।
- उदाहरण: अच् = प्रथम माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' के आदि वर्ण 'अ' को चतुर्थ सूत्र 'ऐऔच्' के अन्तिम वर्ण 'च्' से योग कराने पर अच् प्रत्याहार बनता है। यह अच् प्रत्याहार अपने आदि अक्षर 'अ' से लेकर इत्संज्ञक च् के पूर्व आने वाले औ पर्यन्त सभी अक्षरों का बोध कराता है। अतः,

- अच् = अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ।

- इसी तरह हल् प्रत्याहार की सिद्धि ५वें सूत्र हयवरट् के आदि अक्षर ह को अन्तिम १४ वें सूत्र हल् के अन्तिम अक्षर (या इत् वर्ण) ल् के साथ मिलाने (अनुबन्ध) से होती है। फलतः,

- हल् = ह य व र, ल, ञ म ङ ण न, झ भ, घ ढ ध, ज ब ग ड द, ख फ छ ठ थ च ट त, क प, श ष स, ह।
- उपर्युक्त सभी 14 सूत्रों में अन्तिम वर्ण (ण् क् ङ् च् आदि) को पाणिनि ने इत् की संज्ञा दी है। इत् संज्ञा होने से इन अन्तिम वर्णों का उपयोग प्रत्याहार बनाने के लिए केवल अनुबन्ध (Bonding) हेतु किया जाता है, लेकिन व्याकरणीय प्रक्रिया मे इनकी गणना नही की जाती है अर्थात् इनका प्रयोग नही होता है।

किन वर्णों की इत् संज्ञा होती है, इसका निर्देश पाणिनि ने निम्नलिखित सूत्रों द्वारा किया है:

- (१) उपदेशेऽजनुनासिक इत् : उपदेश में अनुनासिक अच् (स्वर वर्ण) इत् होते हैं। (उपदेश – सूत्रपाठ (माहेश्वर सूत्र सहित), धातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ, प्रत्यय, आगम, आदेश इत्यादि धातुसूत्रगणोणादि वाक्यलिंगानुशासनम्। आदेशो आगमश्च उपदेशाः प्रकीर्तिता ॥) अनुनासिक – मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः। अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण मुख एवं नासिका दोनो की सहायता से किया जाए। अष्टाध्यायी में पाणिनि ने जिन वर्णों की अनुनासिकता का निर्देश किया है वही अनुनासिक माने जातें हैं।)

- (२) हलन्त्यम्: उपदेश में (अन्त्यम्) अन्तिम (हल्) हल् = व्यंजन वर्ण इत् संज्ञक होते हैं। लेकिन विभक्ति में अन्तिम तकार (त्), सकार (स्) तथा मकार (म्) का लोप नहीं होता है – न विभक्तौ तुस्माः
- इत् संज्ञा का विधान करने वाले अन्य सूत्र हैं:
- (३) आदिर्ञिटुडवः
- (४) षः प्रत्ययस्य
- (५) लशक्वतद्धिते
- (६) चुटू
- इत् संज्ञा होने से इन वर्णों का लोप – तस्य लोपः (1-2-9) सूत्र से होता है। लोप का अर्थ है – अदर्शन – अदर्शनं लोपः। फलतः, इत् संज्ञा वाले वर्ण विद्यमान रहते हुए भी दिखाई नहीं पड़ते। अतः, इनकी गणना भी नहीं की जाती है।

प्रत्याहार की महत्ता एवं उपयोग

- पाणिनि को जब भी अक्षर-समूह विशेष की आवश्यकता होती है, वे सभी अक्षरों को पृथक् – पृथक् कहने की बजाए उपयुक्त प्रत्याहार का प्रयोग करते हैं जिसमे उन अक्षरों का समावेश होता है।
- उदाहरण: पाणिनि एक विशिष्ट संज्ञा (Technical device) 'गुण' की परिभाषा देते हैं:

- अदेङ् गुणः अर्थात् अदेङ् को गुण कहते हैं। यहाँ,
- अदेङ् = अत् + एङ् (व्यंजन संधि)। इस उदाहरण में एं एक प्रत्याहार है।
- माहेश्वर सूत्र – एओङ् के आदयक्षर 'ए' एवं अन्तिम अक्षर ङ् के अनुबन्धी से यह प्रत्याहार बना है। (आदिरन्त्येन सहेता)
- एङ् = ए ओ ङ्
- एङ् के अन्तिम अक्षर ङ्की इत् संज्ञा होती है (हलन्त्यम्)। इत् संज्ञा होने से उसका लोप हो जाता है (तस्य लोपः)। फलतः,
- एङ् = ए, ओ

- अतः, अ (अत्), ए तथा ओ को गुण कहते हैं। (अदेङ् गुणः)

- उदाहरण: इको यणचि : यदि अच् परे हो तो इक् के स्थान पर यण् होता है।

- अच् = अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।
- इक् = इ, उ, ऋ, ऌ।
- यण् = य, व, र, ल।
- यदि पाणिनि उपर्युक्त प्रत्याहारों का प्रयोग नहीं करते तो उन्हे कहना पड़ता:
- यदि, इ, उ, ऋ, ऌ के बाद अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ रहें तो इ, उ, ऋ तथा ऌ के स्थान पर क्रमशः य, व, र, ल, होता है।
- इस कथन को पाणिनि ने अत्यन्त संक्षिप्त रूप में मात्र 'इको यणचि' इन दो पदों से व्यक्त कर दिया है।

MODERN AND SCIENTIFIC RELEVANCE

DANCING EFFECTS

Maheswara Sutra as a healing mantra too as mentioned above a healing mantra and is was chanted to revive the sick or dying. If we see the above information, every dancer/guru/teachers/students/scholars/research scholars should be aware of the fact that sanskrit is a powerful language which not only enhances your body, but your mind and soul leading to the self realization point. This is one tricky situation where the individual is not able to understand and the individual is performing. The depth of the dance is so hollow that, today we are forgetting the hollowness as a result of which, dance is loosing its divine nature as i always tell. Though here the point is that why is this very important point missing.

Why are the teachers/gurus/dancers not learning the dance from this point of view. Here if we see the natya shastra's basic purpose is to cleanse your body/mind/and soul and thus transmit the positive energy to the audience, by which the one who is watching the dance gets that soothings effect.

Now this is the fair bit of challenge for the gurus/student/scholars/research scholars to really look aback into the subject and revamp the style of teaching dance subject as a specialized subject. Because there is lot of theology and the sanskrit language influence in the dance. Its high time that dancers/gurus/scholars/research scholars to really analyze every bit of script from the language point of view.

A CASE STUDY

ROLE OF SPEECH THERAPY WITH MAHESHWAR SUTRA AND PARENTAL SPIRITUAL COUNSELLING IN AUTISM

I N T R O D U C T I O N

AUTISM is a neurodevelopmental disorders characterized by impaired social interaction verbal and non verbal communication, restricted and repetitive behavior. Parents usually notice signs in the first two years of their child's life. Early speech or behavioral interventions can help children with Autism gain self care, social and communication skills. Autism affects information processing in the brain by altering how nerve cells and their synapse correct and organise. How this occurs is not understood. Globally Autism is estimated to affect 21.7 million people as of 2013. It is assumed that the number of people diagnosed has been increasing dramatically since 1980s. An Autism child requires multiple therapies for years together to cope up with day to day life challenges. It becomes hard for the parents to bear emotional, physical and financial burden of the child.

It was inferred from the above facts that therapy is needed both for the child and parents. As speech is the most important components of both diagnostic and treatment modality, MAHESHWAR SUTRA (The *Shiva Sutras or MAHESHWAR SUTRA* are 14 verses that organize the phonemes of sanskrit as referred to on the Astadhyayi of Panini the foundation text of Saskrit grammer) practice was chosen as tool for improvement in speech of the child. Spritual counselling was planned for the parents, so that they may learn better ways of coping with the problem. The other goals behind this case study were as follows:

- To improve articulation of the words of the child.
- To help in developing pronunciation skills /clarity of speech.
- To help in increasing concentration of the child
- To help in reducing aggressive behavior
- Help parents to gain strength and confidence to stay stable in personal and social setting

ABSTRACT

A male child of 7 year old came to the general Ayurveda OPD in March 2013, with chief complaints of problem in speech and lack of social interaction. The child was irritable , aggressive and disobedient. On history taking. It was revealed that he was pre-diagnosed as an autistic child by the registered psychiatrists. His parents had stopped going for the therapies like speech or occupational etc. due to financial burden and only little improvements in the child's behavior or speech. Maheshwar sutra practice for the child and spiritual counselling was done for the parents. Total duration of the therapy was 6 months. The parents spirituals counselling was done for 8 sessions of 40 to 50 minutes each. The Maheshwar sutra practice was done thrice-a-week in sessions of 90 minutes each. The results were encouraging as improvement with eye contact, better speech with formation of two to three sentences, and reduced irritability was seen in the child. The parents found themselves more confident and resourceful after the therapy.

MATERIALS AND METHODS

- Maheshwar sutras were chosen to improve articulation of words of the child.
- It was presumed that the chanting practice of these verses would not only improve the articulation and clarity of speech but also would help in improving concentration, reducing irritability too.
- Thrice-a-week sessions of 90 minutes each were arranged for the child for the whole six months.
- Eight sessions were planned for spiritual counselling with the parents.
- Twice a week sessions of 40-50 minutes each were taken.
- The parents were also allowed in the chanting from the parent was taken before applictaion of both therapy and sessions.

RESULT

- After six months of therapy along with counselling sessions with the parents of the child, the child started speaking about two to three sentences at a time.
- Eye to eye contact improved.
- The irritability was controlled.
- He started responding to his name.
- The parents became more confident.
- Their anxiety and exhaustion considerably reduced.
- Financial burden was also relieved.

DISCUSSION

In the above case study, it was found that recitation of Maheshwar sutras and spiritual counselling for the parents helped the autistic child to yield speaking technique and his parents to learn better coping styles. To understand the reason behind such miraculous results, Indian Psychology theory of mind must be taken into account. According to this theory, there are three components of mind naming SATTAVA, RAJAS, and TAMAS. These are co-existent and are complementary to each other. Any mental disorders occurs, with the unbalance in their state of harmony. When RAJAS and TAMAS components overpower the SATTAV, diseases appear. With application of Maheshwar sutras, the power of holy words, known as sound produced from DAMRU of LORD SHIVA could balance the three components by increasing strength of SATTAVA and reducing that of the others two. It proved as an indirect methods of meditation. Due to this aggression and irritability of the child reduced. On the other hand, spirituals counselling of the parents helped them to come out of their state of complete hopelessness and sorrow. They could learn to surrender, when things go out of hands of the worldly means.

CONCLUSIONS

The conclusions drawn from the case that Maheshwar sutra recitation may prove as a good method to improve speech and social interaction. It even may reduce aggression and irritability in autistic children. In Indian context , where most of the people are religion driven, spiritual counselling may prove like a boost to the tired and hopeless parents of the AUTISTIC children. It may help parents to learn problem solving technique of coping.

Thank You